

जीवन-संघर्ष का विजय सोपान : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ



अजीत कुमार कुशवाहा

शोधार्थी

बोधकथा शोध संस्थान

शिवलोक, गोरखपुर उ. प्र.

प्रस्तावना – शिव नारायण सिंह की साहित्यिक साधना लोककथा परम्परा, मानवीय मूल्यों की सम्वेदना, जीवन-संघर्ष और नैतिकता से अभिन्न रूप में जुड़ी हुई है। हमारे भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही कथाओं, लोकगाथाओं, दृष्टान्तों और बोधकथाओं के माध्यम से ज्ञान, नैतिकता, व्यावहारिकता और जीवन-संघर्षों का सम्प्रेषण होता रहा है। बोधकथा परम्परा समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक निरन्तरता और जीवन-संघर्षों की आधारशिला रही है।

प्रस्तुत शोध आलेख 'जीवन-संघर्ष का विजय सोपान शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ' में यह विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार से उनकी बोधकथाओं में जीवन-संघर्ष का विजय सोपान की जीवन्तता और नैतिकता की गूँज पुनः स्थापित हुई है। शोध के द्वारा यह स्पष्ट करना है कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ किस प्रकार व्यावहारिक भाषा, सहज व स्वाभाविक शैली और कथोपकथन के माध्यम से प्राचीन भारतीय कथा परम्परा को पुनर्स्थापित करती हैं।

संसार में किसी भी देश में उसकी सामाजिक, ऐतिहासिक घटनाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्हीं घटनाओं को लेकर सभ्यता और संस्कृति निर्मित होती है। परन्तु इन घटनाओं से पृथक हटकर कथाओं की भी कम महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं होती। ये कथाएँ भी समाज को एक निश्चित दिशा प्रदान करती हैं। जिससे समाज नई दिशा व ऊर्जा के साथ आगे बढ़ता है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ बच्चों के सर्वांगीण विकास का सोपान बनती जा रही है। ये बोधकथाएँ बच्चों में अपनी जिम्मेदारी की समझ विकसित करती हैं, जीवन में आने वाली कठिनाइयों को कैसे हल किया जाये इसकी प्रेरणा देती हैं। इसके साथ-ही-साथ जीवन में संघर्ष की अनूठी पहल को भी विश्लेषित करती हैं।

बीज-शब्द – जीवन-संघर्ष, मानवीय मूल्य, लोक कथाएँ, सभ्यता व संस्कृति, विजय सोपान, निरन्तरता,

पत्रतन्त्र।

शोध आलेख – भारतीय कथा परम्परा में बोधकथाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। विष्णु शर्मा के पंचतन्त्र, हितोपदेश, जातक कथाओं से लेकर आधुनिक काल तक बोधकथाएँ मानव समाज को दिशा देकर सही मार्ग की ओर ले जाने का कार्य करती रही हैं। तत्कालीन समाज अनेक प्रकार की विषमताओं, विडम्बनाओं एवं विकृतियों से इतने बुरे तरीके से घिर गया है कि अपनी सभ्यता, संस्कृति, परम्पराओं के साथ-साथ भावी पीढ़ियों को बचाने का संकट भी उत्पन्न हो गया। ऐसे दौर में शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ इन जटिलताओं को दूरकर समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं जिससे अंधकार में भटके हुए लोग रोशनी पाकर अपने जीवन को आदर्श रूप में ढाल सकें।

बोधकथाएँ बच्चों व पाठकों को सिर्फ जीवन का अर्थ ही नहीं बताती हैं, बल्कि जीवन जीने की कला व रहस्यों को भी बताती हैं। इनके द्वारा जो शिक्षा मिलती है उससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही सर्वांगीण विकास भी होता है। इनसे मिलने वाली शिक्षा का प्रभाव जीवन पर्यन्त रहता है जिससे हम अपने जीवन को निरन्तर सँवारते रहते हैं। बोधकथाएँ ही जीवन-संघर्ष का पाठ पढ़ाती हैं जिससे व्यक्ति जीवन में सफलताएँ प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक मानता है।

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है और पूरे देश दुनिया का भार उसके ऊपर आ सकता है। इसलिए आज का विद्यार्थी जितना प्रबुद्ध, कुशल, सक्षम और प्रतिभा सम्पन्न होगा, देश का भविष्य भी उतना ही उज्वल होगा। इस दृष्टि से विद्यार्थियों के कन्धों पर अनेक दायित्व आ जाते हैं, जिनका निर्वाह करते हुए वे राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शिव नारायण सिंह ने अपनी बोधकथाओं को

बच्चों के लिए अत्यन्त ग्राह्य बना दिये हैं जिससे छात्र जीवन चर्या में संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड एक) 'अहंकार' बोधकथा में एक राजा की कथा है जिसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई है। एक दिन एक तपस्वी राजा के महल में पहुँचता है। राजा अपने को धन्य समझते हैं वे तपस्वी को अपना सब कुछ देकर शिष्य हो जाना चाहते हैं। परन्तु तपस्वी कहते हैं 'यह सब आपका नहीं' है। राजा अपना शरीर दे देना चाहते हैं तब तपस्वी उन्हें समझाते हैं कि आप अवश्य ही पूर्ण होंगे बस आप अपने अहंकार को दमन कर दीजिए।

इस कथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, आप इस दुनिया में इसीलिए आये हैं कि आप यहाँ से पूर्ण होकर जायें। अगर आप प्रयास करते हैं, अगर आप कोशिश करते हैं, अगर आप अहंकार को अपने अन्दर से बाहर कर देंगे, जिस दिन आपने अहंकार पर विजय प्राप्त कर ली, समझिए उस दिन आप पूर्ण हो गये।" 1

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। जिस देश का विकास जितनी शीघ्रता से होगा, वह राष्ट्र उतना ही महान होगा। अतः विद्यार्थियों के लिए यह अति आवश्यक है कि वे नवीनतम अनुसन्धानों के द्वार खोलें। चिकित्सा के क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थी औषध और सर्जरी के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान कर सकते हैं। वे मानव-जीवन को अधिक सुरक्षित स्वस्थ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसी प्रकार इंजीनियरिंग में अध्ययनरत विद्यार्थी विविध प्रकार के कल-कारखानों और पुलों आदि के विकास में भी अपना योगदान दे सकते हैं। इसे ही ध्यान में रखकर शिव नारायण सिंह जी बच्चों को प्रेरित करते हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-एक 'भटकाव' बोधकथा के माध्यम से वे कहते हैं कि- "अगर आप कुछ करना चाहते हैं तो आपको डटना होगा, आपको लगना होगा, आपको उलझना होगा परिस्थितियों से। परिस्थितियाँ तो आती-जाती रहती हैं। कभी किसी के साथ ऐसा नहीं हुआ कि सारी परिस्थितियाँ उसके अनुरूप हो जायें और वह टॉप कर जाये। ऐसा नहीं होता कि टॉप करने वाले विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ पूर्ण रूप से अनुकूल होती हों। उनके साथ परिस्थितियाँ और भी प्रतिकूल होती हैं। वे उन परिस्थितियों के खिलाफ जद्दोजहद करके ऊँचाई तक पहुँचते हैं, इतनी आसानी से नहीं पहुँच जाते हैं।" 2

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ परिपक्व

ज्ञान से पूर्ण प्रतीत होती हैं। जीवन के लिए परिपक्व ज्ञान परम आवश्यक है। अधिकचरे ज्ञान से गम्भीरता नहीं आ सकती उससे भटकाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने ज्ञान को परिपक्व बनायें तथा परिवार के सदस्यों व सम्पूर्ण समाज को ज्ञान-सम्पन्न बनने, देश की सांस्कृतिक सम्पदा का विकास करने आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपने इस परिपक्व ज्ञान का सदुपयोग कर समाज को एक नई दिशा प्रदान करें। इस कार्य को शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड दो 'संकल्प' बोधकथा में एक किसान की कथा है, जिसे एक पहाड़ को हटाना है क्योंकि पहाड़ के दूसरी ओर किसान का खेत है। पहाड़ के वजह से उसके खेत तक बादल नहीं पहुँचते हैं जिससे उसकी खेती खराब जाती है। अब किसान ने अकेले उसे हटाने का संकल्प लिया, कार्य शुरू किया। बाद में हजारों लोगों ने उसका साथ दिया जिससे उसका संकल्प पूरा हो गया।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं - "प्रिय विद्यार्थियों, आपने देखा एक छोटा-सा किसान, एक अदना सा किसान जिसका इस पहाड़ के सामने कोई अस्तित्व ही नहीं है, उसने उस पहाड़ को वहाँ से हटा दिया। आखिर इसके पीछे बात क्या है ? इसके पीछे जो बात है वही संकल्प है, वही सत्य है। किसान को पहाड़ से परेशानी थी और उस परेशानी को दूर करने के लिए उसने दृढ़ संकल्प किया।" 3

आज का विद्यार्थी समाज में रहकर ही अपनी शिक्षा प्राप्त करता है। पहले की भाँति वह गुरुकुल में जाकर नहीं रहता है। इसलिए उस पर अपने राष्ट्र, परिवार और समाज आदि के प्रति अनेक उत्तरदायित्व आ गये हैं। जो विद्यार्थी अपने इन कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं वे अवश्य ही कहीं-न-कहीं बोधकथाओं से प्रेरणा प्राप्त किये होंगे। इस प्रकार राष्ट्र निर्माण के लिए कर्तव्य-परायणता की भावना का विकास छात्रों में बोधकथाओं के माध्यम से होता रहता है।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-दो 'जिसने जो चाहा...' नामक बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं - "प्रिय विद्यार्थियों, पुरुषार्थी बनिए, बिना पुरुषार्थी बने कुछ नहीं होता है। सब कुछ पुरुषार्थ में निहित है। जो पुरुषार्थी है उसके लिए सब कुछ सम्भव है। अगर आप पुरुषार्थी बन गये तो आपने जो सोचा है

वही होगा।"4

शिव नारायण सिंह जी अनुशासन के प्रति अति जागरूक और तत्पर रहने वाले प्राचार्य हैं। क्योंकि अनुशासन के बिना कोई भी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं हो सकता है। राष्ट्र-निर्माण का भी मुख्य आधार ही अनुशासन है। इसीलिए वे इस दायित्व को भली-भाँति पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। वे चाहते हैं कि सभी बच्चे अनुशासन में रहते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति का चिन्तन करें। जिस प्रकार कमजोर नींव वाला मकान अधिक दिनों तक स्थायी नहीं रह सकता उसी प्रकार अनुशासन से रहित समाज अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रह सकता। विद्यार्थियों को अनुशासित रहते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए तभी वे अपने जीवन में शेष सफलताएँ प्राप्त कर सकेंगे।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड तीन 'परिश्रम' बोधकथा में एक गृहस्थ लोहार की कथा है। वह बहुत परिश्रम करता, उसका पुत्र अब बड़ा हो गया है उसे भी लोहार बनाना चाह रहा है पर बच्चा आनाकानी करता है। पिता ने एक दिन थक-हारकर कहा कि अगर तुम कमाकर दो रुपये भी नहीं देते हो तो तुम्हारा खाना-पानी बन्द हो जायेगा। लड़का पहले तो माँ, बहन से पैसे लेकर पिता को देता है तो पिता उन पैसे को भट्टी में डाल देता है। फिर एक दिन वह कमाकर दो रुपये पिता को देता है। जब पिता इस बार रुपये को भट्टी में डालने जाता है तो लड़का उसे रोक देता है। पिता को तो बस इसी दिन का इन्तजार था कि उसका लड़का अपनी कमाई का महत्त्व समझे।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों, यही वह अवसर है, यही वह समय है और मैं ठीक-ठीक बता दूँ आपको कि यही वह उम्र है, जब आप ऐसा कुछ कर सकते हैं। जिसका परिणाम अद्भुत हो सकता है, आश्चर्यजनक हो सकता है, विस्मयकारी हो सकता है। क्योंकि समय बीत जाने के बाद फिर ऐसी परिस्थितियाँ मिलने वाली नहीं हैं। अगर आप पढ़ाई ईमानदारी से करते हैं, मेहनत से करते हैं, लगन से करते हैं तो निश्चित रूप से आपका यह कार्य पूर्ण होगा और आप सफलता प्राप्त करेंगे।"5

हर सफल इन्सान की जिन्दगी में संघर्ष की एक कथा होती है। यदि हम संघर्ष करते हैं तो सफलता अवश्य ही मिलती है। जब हम जीवन में संघर्ष कर रहे होते हैं तो आन्तरिक धैर्य बनाए रखना बहुत ही कठिन होता है। परन्तु यदि हम इन

परिस्थितियों में सामञ्जस्य स्थापित करते हुए धैर्य बनाये रखते हैं तो सफलता का मिलना तय हो जाता है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ बच्चों को जीवन में संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा देती हैं। इनके कथा-प्रसंग सफलता की कुंजी के समान हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-तीन 'प्रतिकूल परिस्थितियाँ' बोधकथा में एक सरल व मेहनती व्यक्तित्व के किसान की कथा है। जो कठिन परिश्रम से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है। इसकी कथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "हमें संघर्ष को कहना होगा कि हे संघर्ष! तू धन्य है, तेरी प्रेरणा से हमने क्या-क्या नहीं कर दिखाया। जो भी हम कर दिखाने चल रहे हैं या जो कुछ भी हम कर दिखाने वाले हैं या जो कुछ भी हम कर दिखायेंगे, वह सब कुछ तेरे ही कारण होगा, तेरा ही श्रेय होगा, तू ही हमारा मार्गदर्शन करेगा, तू ही उसमें से निकलकर सामने आयेगा और जो भी होगा वह सब तेरे ही कारण होगा।"6

जहाँ तक मैं समझ पा रहा हूँ कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ जीवन-संघर्ष से पूर्णतः जुड़ी हुई हैं। कथाओं से इसकी छटा देखने को मिलती-ही-मिलती है। हर किसी का जीवन सुख वैभव से नहीं भरा रहता है। हमें परिस्थितियों से संघर्ष करके ही जीना है। हमें प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए संघर्ष का सम्मान करना चाहिए। यदि आप आशावादी हैं तो आप समस्या का पता लगाने की कोशिश करेंगे और किसी को दोष दिये बिना इस पर काम करने की कोशिश करेंगे। भले ही आप दूसरों की नजर में विफल होंगे, लेकिन आप आन्तरिक रूप से बढ़ रहे होंगे।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड चार 'साहसी बनें' बोधकथा में महाराजा रणजीत सिंह और मुगलों के बीच चल रहे युद्ध से सम्बन्धित कथा है। उन्होंने मुगलों के छक्के छुड़ा दिये। जब मुगलों को लगा कि अब जीत नहीं पायेंगे तो उसने दो गुप्तचर भेजे और उनके जिम्मे काम लगाया कि किसी तरह से राजा की हत्या कर दो पर वे सफल नहीं हो पाये। उल्टे राजा के पैरों में गिर पड़े। राजा ने उन्हें उठाया और कहा तुम्हारी योजना मैं पहले ही जान गया था। मैं तो अपने साहस की परीक्षा ले रहा था कि क्या इतना साहस मुझमें है। परिणाम तुम सब जान गये, तुम्हें मेरे पैरों में गिरना पड़ा।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण

सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, काम चाहे कितना भी कठिन हो, अगर आप उसे साहसी बनकर स्वीकार कर लें तो समाझिए, आधा काम हो गया है। काम में कुछ बचा ही नहीं, तनिक सोचिए, इस पर विचार कीजिए। अगर आप अपनी इन आत्मिक शक्तियों का विकास नहीं करेंगे जो आपके अन्दर भरी पड़ी हैं, तो आपका ठिकाना नहीं लगने वाला है। आप कहाँ रहेंगे? कहीं अता-पता नहीं रहेगा। अगर आपको स्वयं को कहीं स्थापित करना है, अगर आप इस समाज में अग्रणी हैं तो समाज को यह बताना होगा कि मैं यहाँ आया हूँ और मेरी यहाँ उपस्थिति है, मेरी उपस्थिति दर्ज होनी है यहाँ।"7

हम इस बात से कभी इंकार नहीं कर सकते कि जिन्दगी का दूसरा नाम संघर्ष है। संघर्ष तो शान्ति देता है। हर सफल व्यक्ति का जीवन कभी-न-कभी संघर्षपूर्ण रहता ही है। इसीलिए आज के हर वर्ग के लोगों को यह बात समझनी होगी कि सही दिशा में किया गया संघर्ष, कड़ी मेहनत, विपरीत परिस्थितियों एवं चुनौतीपूर्ण कार्यों को पूर्ण करके सफलता प्राप्त करना श्रेष्ठ है। जीवन के संघर्ष को एक बोझ के बजाय एक आह्वान मानना चाहिए जिससे जीवन को अर्थपूर्ण और सफल बनाया जा सकता है।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड चार में 'खट्टे अंगूर' बोधकथा में एक किसान की कथा है, जो दिन-रात मेहनत करके अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। उसकी कथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, अगर आपने मेहनत की, आपने प्रयास किया, तो आपकी मेहनत बेकार नहीं जा सकती, जरूर उसमें से कुछ-न-कुछ निकलेगा और जो लोग यह कहते आ रहे हैं कि अंगूर खट्टे हैं, शायद वे स्वयं खटाई खाकर निकले हैं घर से और उन लोगों के मुँह में खटाई अभी भी अपना असर किये हुए है तभी उन्हें सब खट्टा-ही-खट्टा समझ में आ रहा है।"8

जीवन में संघर्ष है प्रकृति के साथ स्वयं के साथ, परिस्थितियों के साथ। अनेक प्रकार के संघर्षों का सामना आए दिन हम सबको करना पड़ता है और इनसे जूझना भी पड़ता है। जो लोग इन संघर्षों का सामना करने से कतराते हैं, वे जीवन से हार जाते हैं। यह जीवन भी उन्हीं का साथ देता है जो संघर्ष करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। हर सफल मनुष्य की जिन्दगी में संघर्ष की कहानी अवश्य ही होती है। हम एक सफल मनुष्य को देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं और उसके लिए गौरवान्वित भी होते हैं। परन्तु उसके

जीवन की सफलता के पीछे के संघर्ष से बिल्कुल अनजान होते हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-पाँच 'भय का भूत' बोधकथा में एक व्यापारी की कथा है। व्यापारी को अपना कार्य निपटाकर दूसरे शहर जाना है। काम निपटाने में थोड़ा विलम्ब हो गया। रात होने लगी, रास्ते में जंगल पड़ता था। उसे डर तो पहले से ही था पर करता क्या? जाना भी जरूरी था, चल दिया।

जैसे ही व्यापारी जंगल के बीच पहुँचता है, उसे घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई पड़ती है। उसे लगता है कि मेरे धन को तो लूटेंगे ही कहीं मेरी जान भी न ले लें। अभी कुछ उपाय सोच ही रहा था कि उसे याद आया कि इसी रास्ते में देवी माँ का मन्दिर है उनसे जो माँगो मिल जाता है। जल्दी-जल्दी वह मन्दिर पहुँचकर देवी माँ से अपनी समस्या बताता है। माँ उसे अनेक प्रकार से सुरक्षित होने के लिए बताती हैं पर वह भय के कारण कुछ भी करने में असमर्थता जताता है। अन्त में देवी माँ कहती हैं कि ऐसे में मैं क्या कोई भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता है।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "सफलता के पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण चीज है वह है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ के बारे में कहा गया है कि जो दाहिने हाथ से पुरुषार्थ करता है। पुरुषार्थ कैसे किया जाता है ? दाहिने हाथ से किया जाता है और जब आप दाहिने हाथ से पुरुषार्थ करते हैं तो उस समय आपका बायाँ हाथ क्या करता है ? खाली नहीं रहता है, बायें हाथ को सफलता वरण किये रहती है। जैसे-ही आप दाहिने हाथ से पुरुषार्थ शुरू करते हैं, सफलता आपके बायें हाथ पर आकर बैठ जाती है और आप सफल हो जाते हैं।"9

सफलता और संघर्ष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ये दोनों साथ-साथ ही चलते हैं। चुनौतियाँ केवल बुलन्दियाँ छूने की प्रेरणा ही नहीं देती हैं बल्कि वहाँ टिके रहने की भी प्रेरणा देती हैं। यह बात बहुत ही ठीक है कि संघर्ष करते-करते हम उसमें कुशल हो जाते हैं, उसे करना आसान हो जाता है। पर वही करते रह जाना हमें अपनी ही बनाई सुविधा के घेरे में कैद कर लेता है।

रोम के महान दार्शनिक सेनेका कहते हैं कि- "कठिन रास्ते भी हमें ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। अनिश्चितताएँ हमारी शत्रु नहीं हैं। कुछ स्थायी नहीं होना बताता है कि हम और आप कोई भी जीवन की असीमित सम्भावनाओं को जान नहीं सकते। कभी आप अनिश्चितताओं की तरफ बढ़ते हैं तो कभी वे

आपको ढूँढ लेती हैं। यही जीवन है।"

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-पाँच 'स्वपरीक्षण' बोधकथा में एक बालक की कथा है जो पी.सी.ओ. पर जाकर एक नम्बर मिलाने को कहता है। नम्बर मिलाने पर उधर से एक महिला की आवाज आती है। बालक उनसे काम माँगता पर वह महिला मना कर देती है, लेकिन वह हार नहीं मानता है फिर नम्बर मिलता है, अपनी बात कहता है पर इस बार भी महिला मना कर देती है। बालक अब अन्तिम बार मिलता है फिर भी महिला मना कर देती है।

पी.सी.ओ. वाले कहते हैं तुम झूठ में तीन-तीन बार फोन करके परेशान हुए। उस लड़के ने बताया - मैं परेशान नहीं हुआ। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि मैं जो कार्य कर रहा हूँ उससे मेरा मालिक सन्तुष्ट है या नहीं। अगर वह सन्तुष्ट नहीं होता तो निश्चित रूप से मुझे ऑफर दिया होता और कहता कि मेरा आदमी तो बड़ा दुष्ट है।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "आपको भी निरन्तर अपना परीक्षण करते रहना चाहिए। मैं एक बात और आपसे कहना चाहता हूँ, आपके अन्दर सम्वेदना होनी चाहिए। अगर आप अपने अन्दर सम्वेदना नहीं उत्पन्न कर सकते तो आप किसी को समझ नहीं सकते हैं। आप कुछ भी कर जायेंगे फिर भी रिजल्ट जीरो होना है। क्योंकि जो परिणाम आप देखते हैं वह परिणाम नहीं है और जिसे देख नहीं पाते हैं वही परिणाम है।"10

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-पाँच 'छुट्टी' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आप थोड़ा-सा अपने में परिवर्तन लाइए, तथ्यों को समझिए और उस समझ के अनुसार आचरण कीजिए, निश्चित ही आप अपने लक्ष्य तक पहुँचेंगे। इन गौण चीजों को छोड़ें, इन तुच्छ चीजों के फेर में मत पड़ें, भटकाव से बचें। ये जो ढेरों काम आपके पास हैं उसका कोई मतलब नहीं है। आपको उसके बारे में सोचना नहीं है। उसके बारे में कोई पूछता नहीं है, वह कोई लक्ष्य नहीं है, वह महत्त्वपूर्ण भी नहीं है, जिसके पीछे आप भटक रहे हैं, जिसके पीछे आप परेशान हैं। क्यों परेशान हैं ? मैं यही न आपसे कह रहा हूँ कि अपने विवेक को जागृत कीजिए, अपनी दृष्टि को मंजिल पर रखिए, निश्चित ही आप अपने लक्ष्य पर होंगे।"11

दुनिया में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जो सामान्य रूप से चलने वाली जिन्दगी जीना पसन्द

करते हैं और उन्नति के लिए जीवन में आने वाली कठिनाइयों को पसन्द नहीं करते हैं। दूसरी तरह के वे लोग होते हैं, जो अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं और उसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाते हैं। ऐसे लोगों का जीवन आसान नहीं होता है। इन्हें हर मोड़ पर विभिन्न रुकावटों का सामना करना पड़ता है। पर ऐसे लोग इन रुकावटों का सामना करते हैं। कई बार असफलता भी इनके हाथ लगती है। पर इससे ये लोग घबराते नहीं हैं, ये लोग अपनी गलतियों को सुधारते हैं और नये सिरे से संघर्ष करने में जुट जाते हैं। ऐसे ही संघर्षशील व्यक्तित्वों का सृजन करने वाले हैं शिव नारायण सिंह। क्योंकि उनका व्यक्तित्व भी संघर्ष व चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने व बढ़ाने वाला है।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-छः 'फूल' बोधकथा में एक राजा व चोर की कथा है। राजा अपने राज्य में हो रही अधिक चोरियों के कारण परेशान है। इसलिए उसने बहुत से सैनिकों को तैनात कर दिया। सैनिकों को सफलता भी मिली। तीन चोर पकड़े गये। सुबह राजदरबार में उन्हें लाया गया। राजा ने उन्हें फाँसी की सजा सुना दी। फाँसी वाले दिन दो चोर बहुत परेशान थे। पर एक शान्त होकर विचार कर रहा था। उसने सैनिकों से कहा मुझे राजा से मिलना है, बहुत जरूरी है, नहीं तो यह एक गूढ़ विद्या हमारे साथ ही समाप्त हो जायेगी।

सैनिक राजा से चोर की बात कहकर उसे राजा के पास ले जाते हैं। चोर राजा से कहता है - राजन ! मुझे सोने का वृक्ष उगाने की विद्या आती है। राजा कहता है- बताओ। तब चोर कहता है कि - राजन ! पूर्णिमा की रात्रि में सरसो के दाने के बराबर सोने का दाना बनाकर आपकी फुलवारी में बोया जाये, तो आने वाली पूर्णिमा को उस वृक्ष में सोने के फूल खिलेंगे।

पूर्णिमा आने वाली है। सारी तैयारी की जा चुकी है। पूर्णिमा की रात्रि को राजा ने चोर से कहा - अब जल्दी से सोने के बीज बोओ। चोर कहता है- राजन यही तो कठिनाई है, नहीं तो मैं भी राजा नहीं बन गया होता ? अरे ! जिसने चोरी नहीं किया है वही इसे बो सकता है। चोर राजा से बोने के लिए कहता है। राजा गुरुकुल में भोजन की चोरी किये थे इसलिए वे नहीं बो सके। इसी प्रकार रानी, मन्त्री व पूरा राजदरबार ही बोने के लिए तैयार न हो सका। तब चोर ने कहा - जब पूरा राजदरबार ही चोर है तो फाँसी केवल मुझे ही क्यों ? ऐसे में चोर ने राजा की बुद्धि खोल

दिया।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों, मैं तो कहूँगा वह चोर बड़ा साहसी है। विषम परिस्थिति में, उस संकट के क्षण में भी उसने अपने अन्दर साहस रखा, धैर्य रखा और अपने को उबार लिया। मेरा आपसे केवल यही कहना है कि अभी उबारने जैसी स्थिति आपके साथ नहीं है। आपके साथ जो प्रॉसेस है इसके साथ हो लीजिए और समझिए आपको आपका लक्ष्य मिलना ही है, निश्चित ही लक्ष्य आपका इन्तजार कर रहा है।" 12

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-छ: 'स्वर्ण बेल पत्र' बोधकथा में द्वापरयुग के महानायक श्रीकृष्ण के नेतृत्व से सम्बन्धित है। महाभारत का युद्ध अपने अन्तिम चरण में था। तभी कहीं से पता चलता है कि आज के दिन जो भगवान शिव को स्वर्ण बेल से ढक देगा, जीत उसी की होगी। यह बात पाण्डवों और कौरवों तक भी पहुँचती है।

कौरव पक्ष का प्रमुख दुर्योधन आदेश देता है आनन-फानन में स्वर्ण बेल पत्र तैयार होने लगा। इधर पाण्डवों में सभी लोग मुँह लटकाए बैठे हैं। भगवान श्रीकृष्ण आते हैं उदासी का कारण पूछते हैं, कोई कुछ बताता नहीं है तब वे कहते हैं कि मैं समझ गया तुम्हारी चिन्ता का कारण स्वर्ण बेल पत्र है। वे अर्जुन से कहते हैं तुम अपनी सारी चिन्ता छोड़ो क्योंकि जीत तुम्हारी सुनिश्चित है। तुम अपना गाण्डीव उठाओ और इन्द्र का आह्वान करो, वे तुम्हारी बात अवश्य सुनेंगे। उनके बगीचे में स्वर्ण बेल पत्र का पौधा है।

अर्जुन गाण्डीव उठाते हैं, बाण छोड़ते हैं और इन्द्र के बगीचे से स्वर्ण बेल पत्र टूट-टूट कर सीधे शिव जी के ऊपर गिरने लगते हैं और देखते-ही-देखते शिव जी ढक जाते हैं। परिणाम बताने की जरूरत ही नहीं है। आप जानते ही हैं कि पाण्डव जीत गये।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, मैं समझता हूँ बातें आप बहुत ढंग से समझते हैं और जब समझते हैं तो यह भी जान रहे हैं कि सफलता के लिए संघर्ष जरूरी है, चुनौतियों का सामना करना जरूरी है। आप सोच सकते हैं, आप देख सकते हैं, आप इस बात को महसूस भी कर रहे हैं कि पाण्डवों को कितने सीमित संसाधन में कितने अभाव में संघर्ष करना पड़ा और संघर्ष का परिणाम आपने देखा ही कि भगवान शिव को भी उन्हीं पर प्रसन्न होना पड़ा। मैं बार-बार आपसे यही कहता हूँ कि बस लग जाइए, जैसे ही

लगेगे, सब कुछ आपके अनुकूल होगा।" 13

'मूल्यों के निर्माण कलश' में समीक्षात्मक लेख 'बोधकथाओं से विद्यार्थियों को जीवन-मूल्यों की शिक्षा' के माध्यम से डॉ. कालीचरण यादव कहते हैं कि - "श्री शिव नारायण सिंह की सकारात्मक सोच कथाओं में स्पष्ट नजर आती है। वर्तमान व्यवस्था और परिस्थितियों में जहाँ कुछ नहीं हो सकता का भाव युवा वर्ग में घर करता जा रहा है। नकारात्मक सोच प्रतिभावानों का गला दबा रही है। ऊर्जा का यह क्षरण पलायनवाद को जन्म दे रहा है। सभी की सोच एक तरह की क्यों बन गयी। बिना कुछ लिए-दिए ऑफिसों में कोई काम नहीं हो सकता। सभी भ्रष्ट हैं, हमारे ईमानदार होने भर से क्या होगा। बिना एप्रोच और पैसे के नौकरी नहीं मिल सकती। ऐसी नकारात्मक सोच से समाज दिशाहीन होता जा रहा है। सकारात्मक सोच की पहल आखिर कौन करेगा? इस प्रश्न का उत्तर है - शिव नारायण सिंह और उनकी पुस्तक 'विद्यार्थियों से...'।" 14

इसी समीक्षात्मक लेख में उन्होंने यह भी कहा है कि - "सुख-दुःख, हर्ष-शोक, चिन्ता, भय, व्यग्रता आदि समस्त परिस्थितियों में यदि ग्रन्थ सदैव एक सच्चे परामर्शदाता मित्र के दायित्व को निभाता है तो यह उसकी सार्थकता है। जब मनुष्य अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त होता है, उसके विचारों का समाधान नहीं हो पा रहा है या कहीं बुद्धि काम नहीं कर रही है, ऐसे समय में सच्ची पुस्तकें ही राह सुझाती हैं, कर्मपथ का वे बोध कराती हैं। 'विद्यार्थियों से...' की लघु बोधकथाएँ यह काम करने में पूर्णतः समर्थ हैं।" 15

'मूल्यों के निर्माण कलश' में समीक्षात्मक लेख 'सफलता का सोपान बनती बोधकथाएँ' में डॉ. विजय प्रकाश सिंह कहते हैं कि - "जीवनानुभव, इतिहास, पुराण व लोककथाओं से ऐसे शहद का निर्माण किया है, जो पाठक के लिए, निश्चय ही पुष्टिकारक सिद्ध होगा। इस अनूठे किस्सागोई के सृजनकर्ता ने शिक्षक की भूमिका अदा करते हुए 'विद्यार्थियों से...' के माध्यम से नए समाज की रचना करने का एक सराहनीय प्रयास किया है। यहाँ यह कहना उचित ही नहीं, आवश्यक भी है -

'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।" 16

शिव नारायण सिंह बच्चों में राष्ट्रीय भावना, देश-प्रेम, सेवा-भाव, पूर्ण समर्पण, अपनापन व मानवीय मूल्यों को विकसित करते हैं। बच्चों में अदम्य उत्साह, समर्पण की भावना और कार्य करने की अद्भुत क्षमता समाहित रहती है। पर इन्हें जागरूक

करना होता है। बच्चों के भीतर अपरिमित शक्ति एवं गुणों का भण्डार विद्यमान है। जिसको वे प्रति दिन प्रार्थना-सभा में प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से बच्चों की सुसुप्त शक्तियों एवं गुणों को जाग्रत करके उन्हें सही दिशा एवं मार्गदर्शन करने का प्रयास करते हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड- सात 'नियम' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, बाधाएँ बहुत हैं। गिनेंगे तो गिनते रह जायेंगे। यहाँ आपको सिपाही मिला, दरोगा मिला और मजिस्ट्रेट जी भी मिले। ऐसा नहीं है कि बस इतने से बुरा हो जाना है। प्रतिक्षण, हर क्षण आपको कोई-न-कोई ऐसी विरोधी स्थितियाँ मिलती हैं, विरोधी परिस्थितियाँ मिलती हैं। ऐसी स्थिति में भी आपको अपनी सहज सोच से, स्पष्ट दृष्टि से, अपनी समझ से स्वानुशासन से आगे बढ़ना है।" 17

'तालमेल' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियो, जो तुम हो, जो तुम्हारी वास्तविकता है, वह कठिन परिस्थितियों में स्वतः बाहर आ जाती है। पहली के साथ अभी भी एक माँग है, एक डिमाण्ड है, एक इच्छा है उसकी, उसे स्वर्ग चाहिए और दूसरी के साथ निराशा है, जो जैसा है, बस स्वीकार्य है और डूब जाती है लेकिन तीसरी के साथ? उसे यथार्थ और सच्चाई का बोध है। वह परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए तत्पर है। वह पानी के अन्दर रहना सीखना चाहती है और यही जीवन का मूल मन्त्र है। जिसने भी परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठा लिया, समझो, उसने अपना उद्देश्य पा लिया।" 18

निष्कर्ष- इस प्रकार यहाँ स्पष्ट है कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ जीवन की आधारशिला, मानवीय मूल्यों की संवेदना, नैतिकता और जीवन-संघर्ष से जुड़ी हुई हैं। ये बोधकथाएँ जीवन-पथ पर न केवल पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभा रही हैं, बल्कि पथभ्रष्ट होने से भी रोक रहीं हैं। लोगों में छिपे मनोविकारों और कलुषताओं को धो-मिटकर अँधेरे में आशा की लौ की भाँति प्रज्वलित होकर निरन्तर नई ऊर्जा का संचार कर रही हैं। संघर्षों की प्रेरणा देती हुई जीवन-पथ पर आगे की ओर बढ़ा रही हैं। अन्ततः हम कह सकते हैं कि जीवन-संघर्ष का विजय सोपान है शिव नारायण सिंह जी की बोधकथाएँ।

सन्दर्भ सूची -

1. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 210
2. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 115
3. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 074
4. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 164
5. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 126
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 324
7. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 70-80
8. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 231
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 069
10. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 255
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 425
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 063
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 216
14. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 079
15. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 079
16. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 174
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 105
18. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 499